श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ४

सप्टेम्बर-२०१६

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. संयमित आत्मा वाले साधु -पुरुष ..... आत्मा को देख सकते हैं ।
२. मनःपर्यवज्ञान में जो ग्रहण किया जाता है वह ..... है ।
३. केवलज्ञान के अगाध सागर में से ..... की गंगा प्रवाहित हुई ।
४. कर्म का आंशिक त्याग ..... तत्व है ।
५. कलि का एक ..... परिग्रह का विवेकी पुरुषों ने परिहार करना ।
६. इस ..... में भी संतोष महत्व की भूमिका निभाता है ।
७. इस संसार प्रवाहके शत्रुरुप ..... आप मेरे पापों का शमन करो ।
८. इस लघु संग्रहणी में ..... का विचार करने में आया है ।
९. सम्यक्त्व , मिश्र, मिथ्यात्व मोहनीय ..... के तीन प्रकार हैं ।
१०. हे स्वामी ! अब मुझे अपनी ..... देकर आप मेरा उद्धार कीजिये ।
११. मूल्य देकर खरीदे हुए दास दासी ..... परिग्रह में जानना ।
१२. देवाधिदेव के दर्शन ..... से कर धन्यता का अनुभव करें ।
१३. इन वेदपदो से आत्मा ..... से अलग आत्मा है ऐसा सिद्ध होता है ।
१४. ढोल-नगाडा बजने पर भी खबर न हो वह ..... कहलाती है ।
१५. महाविदेह क्षेत्र के ..... क्षेत्र अकर्मभूमि हैं ।
१६. जो दूध वगैरह माप कर बेचे जाते हैं वो ..... जानना ।
१७. पाँच इन्द्रियों की पूर्णता हो फिर भी गूंगे-बहरे हो जायें वह ..... का उदय कहलाता है ।
१८. चौथे आरे में जन्मे ..... समचतुरस्त्र संस्थान वाले थे ।
१९. हृदय में शुभ और शुद्ध भावों की परंपरा ..... से निर्माण होती है ।
२०. संपूर्ण भव चक्र में एक बार ही प्राप्त होने वाला ..... सम्यक्त्व मनुष्यभव में ही पा सकते हैं ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. कौन से व्रत का पालक गृहस्थ उच्च शीलधर्म के कारण मुनि-साधु-समान है ?
२. जीवाजीवादी तत्व पर श्रद्धा को मलिन करे वह कौनसा कर्म है ?
३. किनके शरीर लक्षणवंत होते है ?
४. बतीस हजार मुकुटबद्ध राजा किनके पीछे चलने वाले हैं ?
५. व्रती श्रावक पराया विवाह जोडे तो उसे कौनसा अतिचार लगता है ?
६. श्री वायुभूति ने किसके अनुसार वेद-वेदान्तो का अभ्यास किया ?
७. क्षायिक सम्यक्त्व से पहले जीव को कौनसा सम्यक्त्व रहता है ?
८. श्री वीर को वंदना करने आये सौधर्मेन्द्र ने किसकी विकुर्वणा की ?
९. चौर्यासी लाख जीवयोनि में भटकाने की ताकत किसमें है ?
१०. अर्ध चक्रवर्ती से आधा बल कौनसी निद्रा वाले को होता है ?
११. श्री वायुभूति ने किस दिन श्री वीर प्रभु से त्रिपदी पाई ?
१२. शीलव्रत के पालन के लिये कौन से भगवान की आराधना करनी चाहिये ?
१३. किसकी प्राप्ति के लिये तीन प्रदक्षिणा श्रावक श्राविका दे ?
१४. किराने की वस्तुए वगैरह जो तौल कर बेची जाती हैं, वे किस परिग्रह में आती हैं ?
१५. कर्म का संपूर्ण नाश वह कौनसा तत्व है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) निज्जरणा २) केलीवेश्म ३) जमगा ४) गणियपयं ५) हय ६) सोपानं ७) गिरं ८) जणवय
९) मीसं १०) मज्जं ११) विहं १२) चित्त १३) वर १४) ठिअ १५) खइगा १६) सत्त
१७) धंत १८) तओ १९) वेयणिअं २०) सुह

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B
१) हिरण	१) प्रणाम
२) कुरुदेश	२) कटाक्ष
३) सामान्योपयोग	३) वंतसक
४) अर्धावनत	४) संलेखना
५) वर्षधर	५) मिथ्यात्व मोहनीय
६) तीव्र मोह	६) प्रदक्षिणा
७) अनंग	७) शांतिनाथ
८) समवसरण	८) कच्चा रुपा
९) कर्णिका	९) दर्शन
१०) राजगृही	१०) वक्षस्कार

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. श्री जिनेश्वर परमात्मा के दर्शन करने पर कितने उपवास का लाभ होता है ?
२. श्री अग्निभूति वायुभूति से कितने वर्ष बडे थे ?
३. रम्यक् क्षेत्र का प्रमाण कितना है ?
४. चउप्पय परिग्रह में कितने प्रमुख चौपद जीव बतायें हैं ?
५. दर्शनावरणीय कर्म में दर्शन के आवरण कितने है ?
६. श्री शांतिनाथ कितनी सुंदर युवतीओं के पति हुए ?
७. श्री अग्निभूति ने कितने वर्ष तक चारित्र पाला ?
८. सौधर्मेन्द्र के द्वारा बनाये गये हाथीयों में प्रत्येक को कितने मस्तक थे ?
९. संवर तत्व कितने भेद वाला है ?
१०. कितने कर्मो के संपूर्ण क्षय से क्षायीक सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. सामायिक में माला गिनते नींद करलें वह निद्रा कहलाती है ।
२. परिधि को व्यास के पाव (१/२) भाग से गुणणे से वस्तु का क्षेत्रफल आता है ।
३. पराइ स्त्री को देखकर बहुत चाहना की हो वह अनंग अतिचार जानना ।
४. महाविदेह क्षेत्र एक लाख योजन उत्तर-दक्षिण लंबा है ।
५. शत्रुओं के गण को जीतने वाले श्री अजितनाथ स्वामी को मैं प्रणाम करता हूँ ।
६. तिर्यंच और नरक गति में अधिकतर अशाता वेदनीय का उदय होता है ।
७. सोना (सुवर्ण) रुपा ये धन परिग्रह में आते हैं ।
८. वायुभूति ने दस वर्ष केवली पर्याय में विचरण किया ।
९. छद्मस्थ जीवों को प्रथम दर्शनोपयोग होता है, फिर ज्ञानोपयोग होता है ।
१०. इस संसार में कोई भी किसी का नहीं है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. तीन दर्शन मोहनीय सत्ता में होते हैं, परतु आत्मा इन तीनों को ऐसा दबाती है कि उनकी एक भी प्रकृति उदय में न आवे ।
२. मंदिर के द्वार के आगे के सोपान पर स्त्री अथवा पुरुष ने दाहिना पैर रखकर ही उपर चढना ।
३. इस शीलव्रत में भी संतोष महत्व की भूमिका निभाता है ।
४. जिसने तुझे अहंकारी बनाया है, ऐसे इस परिग्रह को तू अच्छी तरह से पहचान ले ।
५. हे भगवान ! आप मेरे पापों का शमन करो, शांत करो ।
६. उम्र में भले दोनों बडे भाइयों से छोटे थे परंतु केवली पर्याय में वे दोनों से बडे थे ।
७. चामर, नृत्य, भावपूजा करने से अनंतगुना पुण्य प्राप्त होता है ।
८. परिग्रह, संचित की हुई सारी वस्तुएं यहीं की यहीं रह जाती है ।
९. भरत आदि सात वासक्षेत्र हैं ।
१०. इसका विवेक गुमा बैठता है, नहीं बोलने का बोले, न करने का करे ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. शीलव्रत समझाइये । २) पांच निद्रा समझाइये ३) वायुभूति गणधर का गृहस्थ जीवन समझाओ ।
४. मंदिर में प्रवेश करने का क्रम संक्षिप्त में समझाओ । ५) श्री शांतिनाथ भ. की चक्रवर्ती की ऋद्धि का वर्णन करो ।

જવાબ પત્ર નીચે ના સરનામે મોકલશોજી
શત્રુંજય એકેડમી, શ્રી પદ્મપ્રભસ્વામી જૈન મંદિર, સ્ટેશન રોડ, ચાળીસગામ – ૪૨૪ ૧૦૧.
જી. જળગામ. મો. ૯૦૨૮૨૪૨૪૮૪
સાચા પરિણામ અને સાચા ઉત્તર માટે વેબ સાઈટ www.shatrunjayacademy.com